

डॉ. जॉन ओसवाल्ट , निर्गमन, सत्र 15, निर्गमन 33-34

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 15, निर्गमन 33-34 है।

खैर, मेरा मानना है कि वह समय आ गया है।

तो, चलिए शुरू करते हैं। चलिए प्रार्थना से शुरू करते हैं। हे प्रभु, हम जानते हैं कि हमें आपसे यहाँ आने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है।

आप हमारे आने से पहले ही यहाँ थे। लेकिन हम आपसे प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु, कि आप हमारे प्रत्येक हृदय और मन को स्पर्श करें, हमें सचेत करें कि आप हम में से प्रत्येक से क्या कहना चाहते हैं। हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आप ही बोलने वाले ईश्वर हैं।

धन्यवाद कि आप शक्ति नहीं हैं। धन्यवाद कि आप केवल जीवन ऊर्जा नहीं हैं। धन्यवाद कि आप ईश्वर हैं जिन्होंने संसार को अस्तित्व में लाने के लिए कहा, जिन्होंने यीशु मसीह में अब हमसे चरम सीमा पर बात की है, और जो हम में से प्रत्येक से बात करना जारी रखते हैं।

हम यहाँ इसलिए आए हैं क्योंकि हम आपकी बात सुनना चाहते हैं। हम सुनना चाहते हैं कि आप अपने पवित्र वचन के माध्यम से हम में से प्रत्येक से क्या कहेंगे। इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें वह सब बताएँ जो आप आज रात इस अध्ययन के माध्यम से हमसे कहना चाहते हैं।

आपके वचन के लिए धन्यवाद। इसे लिखने में शामिल हर व्यक्ति को धन्यवाद। इसे सावधानीपूर्वक संरक्षित करने वालों को भी धन्यवाद।

उन लोगों के लिए धन्यवाद जिन्होंने अपनी जान दे दी ताकि हम अपनी भाषा में, अपनी अश्लील भाषा में इसे पा सकें। धन्यवाद, प्रभु। इसलिए हमारी मदद करें।

हमें इन पलों को हल्के में न लेने में मदद करें, बल्कि हमें यह पहचानने में मदद करें कि इस घड़ी में हमारा एक पवित्र समय है। आपके नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

आप सभी को देखकर बहुत अच्छा लगा। आज शाम यहाँ आने के लिए धन्यवाद। हम अपने अगले-से-अंतिम सत्र में हैं।

अगला सप्ताह आखिरी सप्ताह होगा जब तक कि पवित्र आत्मा न गिर जाए या कुछ और न हो जाए, और हम किसी न किसी तरह आगे बढ़ने का फैसला करें। लेकिन कम से कम मानवीय योजना के संदर्भ में, अगले सप्ताह हम अध्याय 35 से 40 पर विचार करेंगे और यहाँ अपना अध्ययन समाप्त करेंगे। मैं उस समय आपसे बात करूँगा।

फ्रांसिस एस्बरी सोसाइटी ने मुझे एक और सेमेस्टर या साल या जो भी हो, के लिए जाने पर विचार करने के लिए कहा है। इसलिए, मैं आपसे इस बारे में बात करूँगा कि हम शरद ऋतु में किस बारे में बात कर सकते हैं। किसी ने लेविटस कहा।

मुझे यकीन नहीं है कि मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार हूँ। शायद हम ऐसा कर सकें। मैंने पाँच सप्ताह के सत्र में लेविटस किया है, इसलिए यह संभव है कि हम ऐसा कर सकें।

लेकिन मैं इसके बारे में आपसे बात करूँगा। ठीक है। हम आज रात अध्याय 33 और 34 पर विचार कर रहे हैं।

जैसा कि मैंने आपको कई बार बताया है, हम इस पूरी इकाई को 25 से 40 तक देख रहे हैं, वास्तव में, एक ऐसी इकाई के रूप में जिसमें परमेश्वर अपने व्यक्तित्व को प्रकट कर रहा है। उसने अध्याय 1 से 15 में क्या प्रकट किया? क्या आपको वह प याद है जिसे उसने प्रकट किया? उसकी शक्ति। यह 1 से 15 में है।

16 से 18 तक वह क्या प्रकट करता है? उसका विधान। उस आदमी को एक स्वर्ण सितारा दो। मेरे अस्तित्व के लिए कुछ औचित्य है।

ठीक है। अध्याय 19 से 24 में, वह क्या प्रकट करता है? उसके सिद्धांत। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब, इस भाग में, वह अपने व्यक्तित्व को प्रकट कर रहा है। ये सभी मानवीय समस्या और मुक्ति की आवश्यकता से संबंधित हैं। हमें बंधन से मुक्ति की आवश्यकता है।

परमेश्वर उस बंधन की परवाह करता है जिसमें मनुष्य पीड़ित है और संघर्ष करता है। वह बंधन जिसके अधीन हम दूसरों को रखते हैं। लेकिन यही एकमात्र समस्या नहीं है जिससे परमेश्वर मुक्ति की पेशकश कर रहा है।

इससे भी बड़ी समस्या धार्मिक अंधकार की है। हम नहीं जानते कि परमेश्वर कौन है। और इसलिए, परमेश्वर अपने विधान और अपने सिद्धांतों को प्रकट करके हमें प्रकाश दिखा रहा है।

इस बारे में प्रकाश कि वह कौन है, वह किस तरह का ईश्वर है, वह क्या काम कर रहा है। और हम यह सुझाव दे सकते हैं कि तब, वास्तव में, बाहर निकलने का रास्ता, जो निश्चित रूप से, पुस्तक के शीर्षक का अर्थ है, पूरा हो गया है। वे मिस्र से बाहर हैं।

वे अपने धार्मिक अंधकार से बाहर आ गए हैं। लेकिन किताब यहीं खत्म नहीं होती। और फिर किताब हमें बताती है कि आखिर इंसान की असली समस्या क्या है।

सबसे बड़ी मानवीय समस्या अलगाव है। हम अपने निर्माता से अलग हो गए हैं। हम अपने जीवन के स्रोत से अलग हो गए हैं।

और यही पलायन का असली उद्देश्य है। मैं, लेविटस और नंबरर्स में बाइबिल पढ़ने के अपने चक्र में इस बिंदु पर अपनी भक्ति कर रहा हूँ, और मैं इस बात से चकित हूँ कि कितनी बार परमेश्वर कहता है, मैंने तुम्हें मिस्र से छुड़ाया ताकि तुम मेरे लोग बनो और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँ।

तो, यह पुस्तक हमें बता रही है कि यह परम संबंध का उद्देश्य है, हमारे साथ एक संबंध, जो परमेश्वर चाहता है। हमने देखा कि कैसे यह खंड तीन भागों में विभाजित है। सबसे पहले अध्याय 25 से 31 में हमें निर्देश मिलते हैं।

न केवल तम्बू के लिए बल्कि तम्बू में सेवा करने वाले याजकों के लिए भी। फिर, अध्याय 35 से 40 में, हमें इस बात की रिपोर्ट मिलती है कि उन्होंने वास्तव में उन निर्देशों का पालन कैसे किया। लेकिन दुखद रूप से बीच में जो खड़ा है वह सोने का बछड़ा है।

अध्याय 32 से 34. जिसमें लोग अपने लिए वही चीज़ें पूरी करने की कोशिश करते हैं, जिनसे निपटने के लिए परमेश्वर तैयारी कर रहा है। इस अध्याय की, या माफ़ करें, इस खंड की, बड़ी विडंबना यह है कि जिस समय परमेश्वर अपने पूर्वज्ञान में है, अलगाव की समस्या से निपट रहा है, वे नीचे यह कह रहे हैं कि हम नहीं जानते कि उस साथी मूसा का क्या हुआ, जो हमें मिस्र से बाहर लाया था।

तो, हमें एक ऐसा ईश्वर बनाओ जो हमारे आगे चल सके। और आप स्वर्ग को रोते हुए सुनेंगे। देवदूत कहते हैं अरे नहीं, नहीं, नहीं।

नहीं, नहीं, बस थोड़ा और इंतज़ार करो। नहीं, हम इंतज़ार नहीं कर सकते। हमें जल्दी है।

और इसलिए, हमने पिछले सप्ताह इस घटना के बारे में बात की और फिर कुछ परिणामों के बारे में बात करना शुरू किया और उन परिणामों के बारे में आज शाम इस खंड में विस्तार से बताया गया है। तब प्रभु ने मूसा से कहा, इस जगह से चले जाओ। तुम और वे लोग जिन्हें तुम मिस्र से निकाल कर लाए हो।

और उस देश पर चढ़ो जिसके बारे में मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर कहा था कि मैं इसे तुम्हारे वंशजों को दूंगा। मैं तुम्हारे आगे-आगे एक दूत भेजूंगा और कनानियों, एमोरियों, हितियों, परिजियों, हिवियों, यबूसियों और दीमकों को बाहर निकाल दूंगा। और अरे नहीं, यबूसियों का तो नाम ही आखिरी है।

हाँ, ठीक है। ये दो आयतें हमें परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में क्या बताती हैं? उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया है, लेकिन परमेश्वर क्या करने जा रहा है? वह अपने वादे पूरे करने जा रहा है। परमेश्वर एक वादा निभाने वाला परमेश्वर है।

हममें से कई लोगों के पास ये बक्से होते हैं, या हमारे पास छोटे-छोटे वादे वाले बक्से होते थे। कैरन और मेरे पास एक है। हम वादा निकालना भूल जाते हैं।

लेकिन यह सच है। वह परमेश्वर है जो वादे करता है। वह परमेश्वर है जो वादे निभाता है।

वह भूत, वर्तमान और भविष्य का भगवान है। मूर्तियाँ वर्तमान के भगवान हैं। कोई अतीत नहीं है।

कोई भविष्य नहीं है। सिर्फ अभी ही मायने रखता है। सुनने में तो यह टेलीविज़न जैसा लगता है, है न? ठीक है।

पद्य 3, दूध और शहद से बहने वाली भूमि पर चढ़ जाओ, लेकिन मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा क्योंकि तुम एक हठीले लोग हो। अब, मैंने तुम्हारे लिए उस हठीलेपन को कई बार चित्रित किया है, इसलिए मुझे आशा है कि तुम उसे समझ गए होगे। बछड़ा जो अपने खुरों में खुदाई करता है और कहता है, नहीं, मैं वहाँ नहीं जा रहा हूँ जहाँ भी वह है।

तुम एक जिद्दी लोग हो और मैं तुम्हें रास्ते में ही नष्ट कर सकता हूँ। यह आयत हमें परमेश्वर के बारे में क्या बताती है? वह पापी लोगों के बीच में नहीं रहेगा। मुझे नहीं लगता कि हममें से ज़्यादातर लोग इस बात पर यकीन करते हैं।

मुझे लगता है कि हममें से ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि हम अपने छोटे-मोटे पापों को जारी रख सकते हैं और भगवान, आकाश में महान दादा, कहेंगे, ओह, यह सब ठीक है, प्रिय। यह अभी भी हमारे लिए उपलब्ध है, भले ही हमें इसकी ज़रूरत न हो। हाँ, वह इस संदर्भ में बात नहीं कर रहा है, हम अपने स्वयं के पाप के बारे में बात कर रहे हैं।

और परमेश्वर की व्यक्तिगत उपलब्धता निश्चित रूप से एक वास्तविकता है। लेकिन मुझे लगता है कि हममें से कई लोग, वास्तव में, पाप में जीने और परमेश्वर के साथ संगति करने की अपेक्षा करते हैं। वेस्ले के दृष्टिकोण के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि वह पाप को बहुत गंभीरता से लेता है, कि आप पाप में रहते हुए भी परमेश्वर के साथ संगति नहीं कर सकते।

हाँ? और फिर भी भगवान पूरे समुदाय से कह रहे हैं, तुम आगे बढ़ो और जाओ, मैं नहीं जा रहा हूँ। हाँ, हाँ। और मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है।

धर्मी लोग ही दुष्टों के साथ कष्ट भोगते हैं। अब, अच्छी खबर यह है कि, अगर आपको उत्पत्ति 18 और 19 याद है, तो परमेश्वर कहता है, अगर मुझे सिर्फ 10 धर्मी मिल जाएँ तो मैं 20,000 दुष्टों को छोड़ दूँगा। और यह एक महान विषय है जो यहूदी विचारधारा में व्याप्त है।

अगर 10 धर्मी लोग हैं, तो उम्मीद है। लेकिन यह जेकेल कहता है, मैंने एक की तलाश की और उसे नहीं पाया। तो हाँ, बार-बार, आप पाते हैं कि बाइबल में धर्मी लोग दुष्टों के साथ कष्ट झेलते हैं।

मुझे पूरा भरोसा है कि जब यरूशलेम का अंत हुआ, तो वहाँ बहुत से धर्मी लोग थे जिन्होंने अपने बच्चों को भूख से मरते देखा। और हाँ, हम इससे बच नहीं सकते। तो, इसका क्या प्रभाव पड़ता है? प्रसिद्ध पंक्ति जो मैंने लगभग 10 अलग-अलग लोगों के बारे में सुनी है, अगर भगवान अमेरिका का न्याय नहीं करते हैं, तो उन्हें सदोम और अमोरा से माफ़ी मांगनी होगी।

मुझे लगता है कि हम न्याय के सामने सीधे खड़े हैं। फिर भी, हमें प्रभु के साथ अपने रिश्ते के संदर्भ में, अपनी गवाही के संदर्भ में, राष्ट्रीय पुनरुत्थान के संदर्भ में परमेश्वर क्या कर सकता है, इस संदर्भ में धार्मिक जीवन जीना जारी रखना चाहिए। यह निराशा का कारण नहीं है, लेकिन यह यथार्थवाद का कारण है।

हाँ? यह दुखद है, लेकिन सच है, लेकिन कभी-कभी, शायद बाइबल भी यही कहती है। हाँ। हाँ।

चर्च का जीवन भी इसी तरह से प्रभावित हो सकता है। यह जीवंत, महत्वपूर्ण हो सकता है, और कुछ ऐसा घटित हो सकता है जो चीजों के स्वर को बदल देता है और त्रासदी का परिणाम होता है। हाँ।

हाँ। हाँ। तो, भगवान कहते हैं, तुम जानते हो, तुम कौन हो और मैं कौन हूँ, हम एक साथ नहीं रह सकते।

अब, हम इसे ध्यान में रखना चाहते हैं, क्योंकि यह चर्चा का विषय होने जा रहा है क्योंकि हम यहाँ आगे बढ़ते हैं। श्लोक 4 से 6। जब लोगों ने ये दुखद शब्द सुने, तो वे विलाप करने लगे, और किसी ने कोई आभूषण नहीं पहना। क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, इस्राएलियों से कहो, तुम एक हठीले लोग हो।

अगर मैं एक पल के लिए भी तुम्हारे साथ चलूँ तो मैं तुम्हें नष्ट कर सकता हूँ। अब, अपने गहने उतार दो, और मैं तय करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या करना है। इसलिए, इस्राएलियों ने अपने गहने उतार दिए।

यह किस बारे में है? पाप की पहचान? हालांकि, आभूषणों का पाप से क्या लेना-देना है? आत्म-प्रशंसा? अरे, मैं बहुत अच्छी लग रही हूँ, है न? तुम्हें मेरी नाक की अंगूठी पसंद है? शायद यह यहाँ बालियों की तुलना में महत्वपूर्ण है। सोने की टोपी के लिए पहले बालियाँ तोड़ी गईं, और अब हम देखते हैं, शायद मुझे यह खुद ही करना चाहिए। ठीक है, मुझे लगता है।

मुझे लगता है कि यह उनके अहंकार और गर्व और जो कुछ भी है, उससे खुद को अलग करना है। मुझे लगता है कि यह बहुत सही है, खासकर आभूषणों और बालियों के बीच के संबंध के बारे में। बालियों का इस्तेमाल सोने के बछड़े को बनाने के लिए किया गया था, और अब ऐसा लगता है कि लोग कह रहे हैं, मैं यहाँ जो कुछ हुआ है, उसके शोक में, अपने पाप के दुःख में इन आभूषणों के बाकी हिस्सों को उतारने जा रहा हूँ।

हाँ. हाँ. हम्म.

हम्म-हम्म. हाँ. हाँ.

हालाँकि मुझे लगता है कि यह कहना उचित होगा, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया गया कि ऐसा क्यों किया गया। हाँ। हाँ।

हाँ। क्या यह मेरे लिए है? और मुझे लगता है कि यह फिर से एक गंभीर मुद्दा है जो हमारे पूरे जीवन में चलता रहता है। अगर भगवान ने मुझे चीज़ें दी हैं, तो वे किसके लिए हैं? अगर भगवान ने मुझे योग्यताएँ, प्रतिभाएँ, अगर भगवान ने मुझे धन दिया है, तो वे किसके लिए हैं? क्या मैं इसका इस्तेमाल अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए करूँ? और इसका जवाब है नहीं।

नहीं, ऐसा नहीं है। यह मुझे परमेश्वर द्वारा उसके उद्देश्यों के लिए उपयोग करने के लिए दिया गया है। अब, वास्तव में, उसके उद्देश्यों में आशीर्वाद शामिल हो सकता है, जहाँ, हाँ, आप और मैं इन चीज़ों का आनंद लेते हैं जो वह देता है, लेकिन हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे एक उपहार हैं।

वे एक उपहार हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि वे इस अर्थ में, मिस्र के सभी आभूषणों में घूमते हुए कह रहे हैं, हा, मुझे देखो। मैं कुछ और हूँ।

और अब वे कह रहे हैं, ओह, मैं और कुछ नहीं हूँ। हाँ। हाँ।

ये आभूषण मिस्र के थे। और इसलिए, आपके पास साँप, भृंग और अन्य प्रकार की चीज़ें हैं जिनकी मिस्र के लोग पूजा करते थे। इसलिए, यहाँ बहुत सारे निहितार्थ हैं जो शोक की इस भावना में जाते हैं।

यह पहला संकेत है कि अब उन्हें एहसास होने लगा है कि उन्होंने क्या किया है। एक मिनट रुकिए। अरे, भगवान।

हम यहाँ बहुत अच्छी स्थिति में नहीं हैं, है न? मूसा ने हमारे सोने के बछड़े को तोड़ दिया है, इसलिए वह हमारा नेतृत्व नहीं कर सकता, हमारा मार्गदर्शन नहीं कर सकता और हमारी रक्षा नहीं कर सकता। और प्रभु कहते हैं कि वह हमारा नेतृत्व नहीं करेंगे, हमारा मार्गदर्शन नहीं करेंगे और हमारी रक्षा नहीं करेंगे। हम यहाँ बड़ी मुसीबत में हैं।

हाँ, हाँ, हम हैं। ठीक है।

अच्छा। चलिए आगे बढ़ते हैं। 33.7 से 11.

मूसा एक तम्बू लेता था और उसे शिविर के बाहर कुछ दूरी पर खड़ा करता था, जिसे वह मिलन का तम्बू कहता था। जो कोई भी प्रभु के बारे में पूछताछ करता था, वह शिविर के बाहर मिलने के लिए तम्बू में जाता था। जब भी मूसा तम्बू के पास जाता, तो सभी लोग उठकर अपने तंबू के द्वार पर खड़े हो जाते और मूसा को तम्बू में प्रवेश करने तक देखते रहते।

जैसे ही मूसा तम्बू में जाता, बादल का खंभा नीचे आ जाता और प्रवेश द्वार पर रुक जाता, जबकि प्रभु मूसा से बात करते। जब भी लोग तम्बू के प्रवेश द्वार पर बादल के खंभे को खड़ा देखते, तो वे सभी अपने तंबू के प्रवेश द्वार पर खड़े होकर आराधना करते। प्रभु मूसा से आमने-सामने बात करते, जैसे कोई अपने मित्र से बात करता है। फिर मूसा शिविर में वापस आ जाता। लेकिन उसका युवा सहयोगी, नून का पुत्र, यहोशू, तम्बू से बाहर नहीं निकला। अब, यहाँ पृष्ठभूमि में, मैं इस अंश में पुराने नियम में एक व्याख्यात्मक समस्या पर टिप्पणी करता हूँ।

यह तम्बू कहाँ है? छावनी के बाहर। तम्बू कहाँ होगा? छावनी के अंदर। तम्बू ठीक बीच में होगा, और सभी जनजातियाँ उसके चारों ओर डेरा डालेंगी।

मिलापवाले तम्बू में कौन जाता है? मूसा और यहोशू। मिलापवाले तम्बू में कौन जाता है? याजक, हारून और लेवीय। मिलापवाले तम्बू में क्या होता है? परमेश्वर आमने-सामने बात करता है।

तम्बू में क्या होता है? कई चीज़ें। तम्बू में एक चीज़ क्या होती है? बलिदान चढ़ाना, हाँ। मध्यस्थता, आराधना, और इसके साथ जुड़ी विभिन्न प्रथाएँ।

हर सप्ताह मेज़ पर रोटियाँ नई रखना। हर दिन दीयों में तेल भरना। पर्दे के सामने धूपदान पर धूप जलाना।

और, बेशक, साल में एक बार, महायाजक परम पवित्र स्थान में जाता है और लोगों के लिए प्रायश्चित्त करता है। तो, वहाँ और भी बहुत कुछ हो रहा है। तम्बू, यह स्वर्ण बछड़े की घटना जैसा दिखता है और फसह के पाँच महीने बाद तक सब कुछ ठीक हो जाता है।

और दो महीने, माफ़ कीजिए, छह महीने। सिनाई तक पहुँचने में तीन महीने लगे, और फिर पूरे मामले को सुलझाने में लगभग तीन महीने लग गए। लेकिन दूसरे साल के पहले महीने के पहले दिन तक तम्बू स्थापित नहीं किया गया था।

तो, दूसरे शब्दों में, अध्याय 33 और 34 के समाप्त होने और तम्बू के वास्तव में बनने के बीच छह महीने का अंतराल है। तो यह उस अंतरिम समय के दौरान है। मूसा को यह जानने के लिए पहाड़ पर ऊपर-नीचे दौड़ना नहीं पड़ता कि परमेश्वर क्या कहना चाहता है।

इस छह महीने के अंतराल के दौरान, वह सभा के तम्बू में परमेश्वर से मिल रहा है। फिर, दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन, उनके जाने से लगभग 40 दिन पहले, तम्बू स्थापित किया जाता है। अब समस्या यह है।

स्पष्ट रूप से, ये दोनों एक ही चीज़ नहीं हैं। समस्या यह है कि कई बार ऐसा होता है जब तम्बू को बैठक का तम्बू कहा जाता है। और इसलिए, विद्वानों ने कहा है, ठीक है, जाहिर है कि यहाँ दो अलग-अलग किंवदंतियाँ हैं जो अलग-अलग लोगों द्वारा लिखी गई हैं, और एब्रा के समय में किसी ने उन दोनों को एक साथ रखने के लिए उन्हें जोड़ दिया है और यह बहुत अच्छा काम नहीं किया है।

आप शायद अनुमान लगा रहे होंगे कि मैं इस बात पर यकीन नहीं करता। मुझे लगता है, वास्तव में, आप कह रहे हैं कि तम्बू ने वह सब कुछ अपने हाथ में ले लिया है जो अंतरिम समय के दौरान मिलापवाले तम्बू ने किया था। और इसलिए, इसे तम्बू और मिलापवाले तम्बू दोनों कहा जा सकता है।

और यह अलग-अलग ग्रंथों का संकेत नहीं है। मुझे यहाँ एक सवाल उठता हुआ दिखाई दे रहा है। हाँ, मैं सोच रहा था, शायद यह किसी पुनरुत्थान, आध्यात्मिक पुनरुत्थान के कारण है, जहाँ, हमारे साथ की तरह, हम रविवार को जाकर पूजा कर सकते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि आमने-सामने हों।

और फिर ऐसे समय भी आते हैं, जब आप जानते हैं... हाँ, मुझे लगता है कि यह संभव है, कि जब जीवन शक्ति की भावना अधिक हो, तो मीटिंग के तम्बू का उपयोग किया जा सकता है। दुर्भाग्य से, यह हर समय काम नहीं करता है। लेकिन यहाँ जो कुछ हो रहा है, उसमें यह एक कारक हो सकता है।

लेकिन मुझे लगता है कि इसमें जो बातें कही गई हैं, उनमें से एक यह है कि कभी मत भूलिए कि तम्बू का अंतिम उद्देश्य क्या है। इसका उद्देश्य वेदी पर सस्ता भोजन चढ़ाना नहीं है। इसका उद्देश्य हर सप्ताह मेज़ पर नई रोटी रखना नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप इन दीयों में तेल डालते रहें या धूपबत्ती जलाते रहें। इसका उद्देश्य ईश्वर से मिलना है। और अगर आप यह भूल गए, तो आप सब कुछ भूल गए।

और यही वह बात है जिसके बारे में भविष्यवक्ता लगातार लोगों से पूछते रहते हैं। दया करके, मुझे तुम्हारी मरी हुई भेड़ें नहीं चाहिए। मुझे तुम चाहिए।

ओह, नहीं, नहीं, नहीं, आप मुझे नहीं पा सकते। लेकिन यहाँ मेरी सबसे अच्छी भेड़ है। अगर आप मुझे आशीर्वाद देंगे, भगवान, और मुझे स्टीयरिंग व्हील, एक्सीलेटर और ब्रेक पर अपने हाथ रखने देंगे, तो मैं आपका आदमी हूँ।

और भगवान कहते हैं, नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता। हाल ही में कई लोगों ने टिप्पणी की है, प्रसिद्ध बम्पर स्टिकर जो द्वितीय विश्व युद्ध के समय से ही मौजूद है, भगवान मेरे सह-पायलट हैं। मुझे वह पसंद है जिसमें लिखा है, अगर भगवान आपके सह-पायलट हैं, तो सीट बदल लें।

भगवान सह-पायलट नहीं बनने जा रहे हैं। वह पायलट बनने जा रहे हैं, या वह विमान पर नहीं होंगे। इसलिए, मुझे लगता है कि यही हो रहा है, यही यह अनुस्मारक है।

वह जो था, वही आखिरकार इस बारे में है। ठीक है। इस सब पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया है? जब मूसा तम्बू की ओर जाता है, तो लोग क्या करते हैं? वे खड़े हो जाते हैं।

कहाँ? अपने तंबू के द्वार पर। और वे क्या करते हैं? कौन सा शब्द इस्तेमाल किया गया है? श्लोक 10. वे आराधना करते हैं।

मुझे लगता है, और मुझे कहना ही होगा, यह पाठ में स्पष्ट रूप से नहीं लिखा गया है। खैर, मैं आपसे पूछता हूँ। जब वे मूसा को वहाँ जाते हुए देखते हैं तो उन्हें कैसा लगता है? खुशी है कि यह मैं नहीं हूँ।

ठीक है। खैर, यह वह उत्तर नहीं है जो मेरे दिमाग में था, लेकिन यह हो सकता है। यह हो सकता है।

वहाँ खतरा है। इसमें कोई सवाल ही नहीं है। क्योंकि वह भगवान के पास जा रहा है।

ठीक है। ठीक है। क्या उनके दिलों में भूख बढ़ रही है? काश।

काश। मैं भगवान से इस तरह बात कर पाता। आपको क्या लगता है कि वह वहाँ क्या करता है? आपको क्या लगता है कि भगवान उसके सामने कैसे प्रकट होते हैं? आपको क्या लगता है कि भगवान उससे कैसे बात करते हैं? क्या मेरे साथ भी ऐसा कभी हो सकता है? मैंने यह कहानी तब से सुनाई है जब से मैंने इसे पहली बार सुना है, इसलिए आपने शायद मुझे यह कहानी बताते हुए सुना होगा, लेकिन मैं यहाँ ऊपर हूँ।

विल्मोर शहर के हमारे एक मिशनरी, मौरिस कल्वर ने कई साल उस जगह बिताए जो अब ज़िम्बाब्वे है, और वह एक अवसर के बारे में बताते हैं जब उन्हें एक सर्वोच्च सरदार से मिलने का मौका मिला था। अब, वह सरदारों का सरदार है। वह सर्वोच्च व्यक्ति है।

वह बड़ा केला है। तो, यह एक बहुत ही खास पल है। तो, उन्होंने कहा, मैं सर्वोच्च सरदार के घर में गया, गंदगी का फर्श, लेकिन इतनी बार झाड़ू लगाया गया था, उन्होंने कहा, यह काले ग्रेनाइट की तरह था।

मुखिया अपने सिंहासन पर बैठा था, और मौरिस फर्श पर पैर मोड़कर बैठ गया। वे बात करने लगे। मौरिस ने कहा, पिता, क्या आप ईश्वर को जानते हैं? कोई ईश्वर नहीं? ईश्वर को कौन जान सकता है? मैं देवताओं को तो जानता हूँ, लेकिन ईश्वर को? उसे कौन जान सकता है? क्या आप उसे जानते हैं? हाँ, पिता, मैं जानता हूँ।

क्या आप ऐसा करते हैं? मुझे उसके बारे में बताइए। वह परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता के बारे में बात करने लगा। मौरिस ने कहा, क्या आप कभी परमेश्वर से बात करते हैं? परमेश्वर से बात करते हैं? परमेश्वर से कौन बात कर सकता है? क्या आप परमेश्वर से बात करते हैं? मौरिस ने कहा, हाँ, पिता, मैं करता हूँ।

अभी करो। तो, उन्होंने कहा, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रार्थना करने लगा। उन्होंने कहा, मेरी प्रार्थना के बीच में कहीं मुझे एक बहुत ही अजीब सा एहसास हुआ, और मैंने अपनी आँखें खोलीं और लगभग मर गया, क्योंकि वहाँ, मेरे चेहरे से तीन इंच की दूरी पर, उसका चेहरा था और उसकी आँखें मुझे देख रही थीं, जबकि वह अपने हाथों और घुटनों के बल पर मेरे चेहरे को देख रहा था।

उसने कहा, तुम भगवान से बात कर रहे हो। उसने कहा, तुम भगवान से बात कर रहे हो। हाँ, पिता, मैं भगवान से बात कर रहा हूँ।

क्या आप चाहेंगे? मैं? मैं भगवान से बात कर सकता हूँ। हाँ। और उन्होंने बताया कि कैसे, यीशु मसीह के माध्यम से, हम स्वर्ग के सिंहासन कक्ष में पहुँच सकते हैं जिसके बारे में सर्वोच्च सरदार को सब कुछ समझ में आ गया था।

और उसने उससे पूछा कि क्या वह मसीह को स्वीकार करना चाहेगा। और उसने कहा, हाँ, हाँ। उसने कहा, तो, पिता, तुम परमेश्वर से बात कर सकते हो।

उन्होंने कहा कि वे मेरे बगल में बैठ गए, पैर मोड़े, हाथ जोड़े जैसे मैंने किया था, और उनके चेहरे पर बहुत ही पवित्र भाव था, जो मेरे चेहरे पर भी रहा होगा, और वे धीरे-धीरे, रुक-रुक कर प्रार्थना करने लगे। लेकिन उन्होंने कहा कि एक पल ऐसा आया जब पहिए रनवे से हट गए, और वे प्रार्थना करने लगे। और अचानक, उनकी आँखें खुल गईं, और उन्होंने कहा, मैं भगवान से बात कर रहा हूँ! मैं भगवान से बात कर रहा हूँ! और वापस चले गए।

मुझे आश्चर्य है कि क्या यहाँ भी ऐसा ही कुछ चल रहा है। एक लालसा, एक लालसा। क्या हम कभी ईश्वर को इस तरह जान सकते हैं? अपने पापों के लिए शोक मनाना।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठता की लालसा। और इसलिए, हम श्लोक 12 से 17 तक आते हैं। मूसा ने यहोवा से कहा, तू मुझसे कहता रहा है, इन लोगों का नेतृत्व कर, लेकिन तूने मुझे यह नहीं बताया कि तू मेरे साथ किसे भेजेगा।

तुमने कहा है, मैं तुम्हें नाम से जानता हूँ, और तुम पर मेरा अनुग्रह है। यह उन बातों में से एक है जो परमेश्वर कहता है जब वह लोगों से आमने-सामने बात करता है। मैं उन लोगों की संख्या से रोमांचित हूँ जिनसे मैं पिछले कुछ वर्षों में मिला हूँ जिन्होंने उस पल के बारे में बात की है जब वे परमेश्वर के बारे में जानते थे, और परमेश्वर उनसे बात कर रहा था, और कितनी बार उसके शब्द होते हैं, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

मैं तुम्हें नाम से जानता हूँ, और तुमने मुझ पर कृपा की है। यदि तुम मुझसे प्रसन्न हो, तो मुझे अपने मार्ग सिखाओ ताकि मैं क्या जान सकूँ? क्या हमने इस पुस्तक में पहले भी इस शब्द का सामना किया है? हाँ, बार-बार।

तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। हे प्रभु, मैं आपके मार्ग जानना चाहता हूँ ताकि मैं आपको जान सकूँ और अनुग्रह प्राप्त करता रहूँ। हमारे जीवन में ऐसा बहुत कम होता है।

प्रभु, मैं आपके आशीर्वाद चाहता हूँ, उस न्यूनतम निवेश के लिए जो मैं संभवतः कर सकता हूँ। प्रभु, मैं जानना चाहता हूँ कि आपको क्या पसंद है और क्या नहीं। मैं जानना चाहता हूँ कि आपको क्या पसंद है, मैं जानना चाहता हूँ कि आपको क्या गुस्सा दिलाता है।

मैं जानना चाहता हूँ कि तुम इंसानों के साथ कैसे पेश आते हो। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हें जानना चाहता हूँ। यही तो प्यार है।

मैं कैरेन कैनेडी के बारे में सब कुछ जानना चाहता था, क्योंकि मैं उससे प्यार करता था। सच कहूँ तो अभी भी करता हूँ। मैं तुम्हारे तौर-तरीके जानना चाहता हूँ, मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ, मैं जानना चाहता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें जानना चाहता हूँ।

अब, पद 13 के आखिरी वाक्य को देखें। वह क्या कहता है? हाँ, अब पद 1 को फिर से देखें। आप और वे लोग, क्या? जिन्हें आप मिस्र से बाहर लाए थे। परमेश्वर मूसा को फिर से यह परीक्षा दे रहा है, और मूसा फिर से इसमें सफल हो रहा है।

ये मेरे लोग नहीं हैं, भगवान। ये आपके लोग हैं, जिनका नेतृत्व करने के लिए आपने मुझे कहा है, और जब तक मैं आपको नहीं जानता, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि हमारे खड़े होने का एक कारण खुद पर ध्यान आकर्षित करना है।

मुझे लगता है कि ये लोग, जैसा कि आपने कहा, जानते थे कि वे वास्तव में मुसीबत में थे। वे जानते थे कि मूसा भगवान से बात करने जा रहा था। मुझे लगता है कि वे इसलिए खड़े हुए थे ताकि कह सकें, हमें मत भूलना।

और मूसा को यह एहसास हुआ और उसने कहा, "ये आपके लोग हैं। यह सही है, यह सही है। यह मेरे बारे में नहीं है, भगवान।

यह आपके लोगों के बारे में है और मैं उनके लिए आपके संबंध में कौन हूँ। वहाँ एक पूरा पादरी सम्मेलन है। श्लोक 14, फिर।

प्रभु ने उत्तर दिया, मेरा चेहरा। जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि में टिप्पणी की है, हिब्रू में उपस्थिति के लिए कोई वास्तविक शब्द नहीं है। हर बार जब आप अंग्रेजी में उपस्थिति देखते हैं, तो यह वास्तव में हिब्रू शब्द चेहरा होता है। मेरा चेहरा तुम्हारे साथ रहेगा, और मैं तुम्हें आराम दूंगा।

अब, एक मिनट रुकिए। अगर भगवान को पहले से ही पता था कि वह उनके साथ जाने वाला है, तो उसने क्यों कहा कि वह उनके साथ नहीं जाने वाला है? खैर, वे अभी भी बहुत जिद्दी हैं। यहाँ हम देखते हैं, मुझे लगता है, भगवान और मूसा के बीच एक अधिक घनिष्ठ संबंध है क्योंकि भगवान ने खुद को शिविर से अलग कर लिया है, इसलिए कहा जा सकता है कि लोगों से पूरी तरह से अलग हो गए हैं।

और इसीलिए मुझे लगता है कि यहाँ परमेश्वर और मूसा के बीच इतना घनिष्ठ आदान-प्रदान है। वे उस रिश्ते को समझ रहे हैं। हम इस बारे में बात कर रहे हैं कि परमेश्वर और लोगों के साथ मूसा का रिश्ता कैसा था और यह सब।

यहाँ हम देखते हैं कि, मुझे लगता है, यहीं पर इसका समापन हुआ। मुझे लगता है कि आप सही हैं। यह उस सिक्के का दूसरा पहलू है जिसके बारे में हम पहले बात कर रहे थे।

यदि धर्मी लोग दुष्टों के साथ कष्ट भोगते हैं, तो एक धर्मी व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह परमेश्वर के साथ जाने के लिए न्यूनतम शर्तों को पूरा करे। और यह आपके और मेरे लिए बहुत

कुछ कहता है। मेरा जीवन इस संसार के इस ढेर को कैसे बचा सकता है? हम, परमेश्वर के साथ अपने घनिष्ठ संबंध में, अपने आस-पास की दुनिया पर लाभकारी प्रभाव कैसे डाल सकते हैं? हम शायद कभी नहीं जान पाएँगे।

यह जानना हमारा काम नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि क्या आप और मैं ईश्वर के साथ इतना घनिष्ठ संबंध बना सकते हैं कि यह हमारे आस-पास की दुनिया का स्वाद बदल दे? और इसका जवाब है हाँ। वह जिस बारे में बात कर रही थी वह यह था कि मूसा और ईश्वर और बाकी सभी लोग दूसरी जगह पर थे। क्या यही कारण नहीं है कि यीशु आए थे? आखिरकार, हाँ।

आखिरकार, परमेश्वर शिविर के बाहर नहीं रहना चाहता। वह शिविर के ठीक बीच में रहना चाहता है। वह हर व्यक्ति के दिल में रहना चाहता है।

लेकिन यह भावना है कि जब तक मूसा परमेश्वर के साथ गहराई तक जाने के लिए तैयार नहीं होता, तब तक अवसर नहीं मिलने वाला है। इसलिए, मूसा कहता है, श्लोक 15, यदि आपका चेहरा हमारे साथ नहीं जाता है, तो हमें यहाँ से न भेजें। जब तक आप हमारे साथ नहीं जाते, तब तक कोई कैसे जान सकता है कि आप मुझसे और अपने लोगों से प्रसन्न हैं? और क्या मुझे और आपके लोगों को पृथ्वी के चेहरे पर अन्य सभी लोगों से अलग करेगा? अब, मेरा सवाल यह है कि यह ईसाई जीवन की प्रकृति के बारे में क्या कहता है? अब ध्यान दें कि मूसा क्या कह रहा है।

वह कह रहा है, भगवान, मुझे आपका फ़रिश्ता नहीं चाहिए। और मैं पृष्ठभूमि में पुराने नियम में प्रभु के फ़रिश्ते की समस्या के बारे में थोड़ा बात करता हूँ, कि यह स्वयं प्रभु के साथ उलझ जाता है। और इस सब के बारे में कुछ दिलचस्प त्रित्ववादी चर्चाएँ हुई हैं।

लेकिन मूसा कह रहा है, मुझे तुम्हारे व्यक्तिगत चेहरे के अलावा कुछ नहीं चाहिए। मैं तुम्हें आमने-सामने जानता हूँ। तुम मुझे आमने-सामने जानते हो।

तो, वह पद 15 में क्या कह रहा है? क्या यह कहा जाएगा, लेकिन क्या यह परमेश्वर के साथ होगा? क्या इसका वह रिश्ता होगा? हम इस बारे में बात कर रहे हैं। और यही एकमात्र तरीका है जिससे आप सोच सकते हैं। हम्म-हम्म।

आपको उस रिश्ते में बुलाया जाता है। आपको क्या लगता है कि वह यहाँ और क्या कह रहा है? मुझे नहीं लगता कि मैं दोहरा रहा हूँ, लेकिन मुझे जो आभास होता है वह यह है कि वह कह रहा है, संक्षेप में, हम वह लोग हैं जो हम हैं क्योंकि जो चीज़ हमें बाकी सभी से अलग करती है वह है हमारे साथ आपका चेहरा। वह कह रहा है, आपके चेहरे के बिना कनान अच्छा नहीं है।

हमने तुम्हारा चेहरा यहाँ पा लिया है। इसलिए, अगर यहाँ से जाने का मतलब है कि हम तुम्हारा चेहरा पीछे छोड़ देंगे, तो हम नहीं जा रहे हैं। तुम्हारे चेहरे के साथ रेगिस्तान बेहतर है, बिना चेहरे के कनान से।

और अगर परमेश्वर को मूसा से पहले प्यार नहीं था, तो अब वह उससे प्यार करता है। तुम्हें समझ आ गया, मूसा। तुम्हें समझ आ गया।

यही तो उसने माँगा था। हम्म-हम्म, हम्म-हम्म, हम्म-हम्म। तो, ईसाई जीवन का मतलब आखिरकार स्वर्ग जाना नहीं है।

अब, यह मत कहो कि, अच्छा, यह एक विधर्म है। हो सकता है कि मैं विधर्मी हूँ, लेकिन इस मामले में नहीं। भगवान के बिना स्वर्ग स्वर्ग नहीं हो सकता।

स्वर्ग का मतलब मोती के दरवाज़े, सोने की सड़कें और हवेलियाँ नहीं हैं, किंग जेम्स की भाषा में कहें तो। स्वर्ग का मतलब भगवान का चेहरा है। और यही बात नरक को नरक बनाती है।

ईश्वर वहाँ नहीं है। शायद आपने पहले ही यह कह दिया हो, लेकिन ईश्वर को अविश्वासी द्वारा देखे जाने के लिए, उसे हममें ईश्वर को देखना होगा, हममें उसकी उपस्थिति को देखना होगा। उसका चेहरा।

उसका चेहरा। हाँ, हाँ। जो उन्हें उसकी ओर आकर्षित करेगा।

हाँ, हाँ, हाँ। और वह रेखा, और क्या चीज़ हमें पृथ्वी पर बाकियों से अलग करेगी? बलिदान? उन्हें बलिदान मिले। मंदिर? उन्हें मंदिर मिले।

जीवन में उसकी उपस्थिति की वास्तविकता सब कुछ बदल देती है। और जैसा कि कहा गया है, यीशु मसीह ने हम सभी के लिए वह संभावना खरीदी है।

यह अब सिर्फ़ मूसा के लिए नहीं है। या हारून के लिए, अगर हम इस मामले में हारून को भी शामिल कर सकें। मुझे यकीन नहीं है कि हारून ने कभी भगवान को आमने-सामने देखा था, लेकिन फिर भी।

अब, हमें यहाँ जल्दी करना होगा - श्लोक 18. मूसा ने कहा, अब मुझे अपनी महिमा दिखाओ।

और परमेश्वर ने कहा कि वह उसे पद 19 में क्या दिखाएगा? हे भगवान। मूसा, और फिर से, आपको बस बाइबल से प्रेम करना है। मूसा कहता है, परमेश्वर, परमेश्वर, मैं वास्तव में आपके लिए विशेष हूँ, है न? परमेश्वर कहता है, हाँ, आप हैं।

भगवान, भगवान, क्या आप मुझे अपना दिव्य सार दिखा सकते हैं? और भगवान कहते हैं नहीं। मुझे पूरा भरोसा है कि यहाँ यही हो रहा है। इसमें कहा गया है कि उसने उससे आमने-सामने बात की।

लेकिन अब वह कहता है, कोई भी मनुष्य मेरा मुख देखकर जीवित नहीं रह सकता। नहीं, मैं तुम्हें अपनी महिमा नहीं दिखाऊँगा, बल्कि मैं तुम्हें अपनी भलाई दिखाऊँगा। यही उसका चरित्र है।

तुम मेरे पवित्र सार को देखकर जीवित नहीं रह सकते। कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। इसलिए नहीं कि मैं तुमसे नफरत करता हूँ, बल्कि इसलिए कि घास ब्लास्ट फर्नेस में बहुत अच्छी तरह से जीवित नहीं रहती।

लेकिन आप वाकई मेरे पवित्र चरित्र को देख सकते हैं। आप उस स्वभाव को देख सकते हैं जो इस दुनिया में मेरे स्वभाव को हर दूसरे स्वभाव से अलग करता है। इसलिए, वह कहते हैं, आप मेरी पीठ देख सकते हैं।

इसलिए, उसने दो पत्थर की पटियाँ गढ़ीं, और प्रभु नीचे आया, यह 34-5 है, प्रभु बादल में नीचे आया और उसके साथ वहाँ खड़ा हुआ और अपना नाम घोषित किया। और वह मूसा के सामने से गुजरा। तो, इस अंश के अनुसार, परमेश्वर की पीठ कैसी दिखती है? हमारे पास इस बात का एक भी विवरण नहीं है कि उसने क्या देखा, है न? एक भी नहीं।

यह वही बात है जिसके बारे में हमने पहले बात की थी। मूसा, माफ़ करना, यशायाह, वह सिर्फ़ इतना ही कह सकता है कि परमेश्वर के वस्त्र का किनारा कितना बड़ा था। और जो बुजुर्ग पहाड़ पर परमेश्वर के साथ भोजन करते थे और उसे देखते थे, वे सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि, यार, तुम्हें उसके पैरों के नीचे फ़र्श देखना चाहिए था।

यह स्वर्ग जैसा था। शब्द गायब हो गए। कोई शब्द नहीं है।

हमारे पास क्या है? और हमारे पास शब्द हैं। हमारे पास मूसा ने जो सुना उसका विवरण है। उसने जो देखा उसका विवरण नहीं, बल्कि उसने जो सुना उसका पूरा विवरण है।

अब, जैसा कि मैंने यहाँ पृष्ठभूमि में उल्लेख किया है, ये आयतें, 6 और 7a, पुराने नियम में सबसे अधिक उद्धृत पुराने नियम की आयतें हैं। आपके यहाँ जो संदर्भ हैं वे प्रत्यक्ष उद्धरण हैं। फिर संभवतः अन्य 20 संकेत हैं जहाँ आपके पास कोई प्रत्यक्ष उद्धरण नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि वे इसी के बारे में बात कर रहे हैं।

इसलिए, अगर आप किसी इब्रानी से पूछें कि आपका परमेश्वर कैसा है? तो वह यही उत्तर देगा। दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर, क्रोध करने में धीमा, प्रेम और विश्वास से भरपूर, हज़ारों तक करुणा करने वाला, दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करने वाला। यही कारण है कि योना नीनवे नहीं जाना चाहता था।

उसने कहा, भगवान, मैं जानता हूँ कि आप किस तरह के भगवान हैं। मैं यह बात घर पर भी जानता था। इसीलिए मैंने पूर्व की ओर, माफ़ कीजिए, पश्चिम की ओर जाने की कोशिश की।

क्योंकि मैं जानता था कि तुम किस तरह के गंदे क्षमा करने वाले हो, परमेश्वर कहते हैं, मुझे खुशी है कि तुम यह जानते थे, योना। लेकिन तुमने इसे दिल पर नहीं लिया, है न? जब इब्रानियों ने सारी तैयारी के बाद कादेश बर्निया में आकर कहा, नहीं, हम डरे हुए हैं।

हमें डर है कि कनानवासी आपसे बड़े हैं, यहोवा। और हम कहते हैं, क्या? क्या? क्या तुम मिस्र में नहीं थे? क्या तुम सिनाई के रास्ते पर परमेश्वर का अनुसरण नहीं करते थे? क्या तुमने सिनाई पर उसकी आवाज़ नहीं सुनी? और तुम कनानियों से डरते हो? और यह आयत वह आयत है जो हमें समझाती है कि हिब्रू लोग अचानक क्यों नहीं मिट गए, क्योंकि परमेश्वर कौन है। ये मुख्य शब्द हैं।

दयालु, कोमल, कृपालु, दयावान, क्रोध में धीमा। मैंने इसे पहले भी आपके सामने उद्धृत किया है, क्योंकि यह बहुत बढ़िया है। उसकी नाक वाकई बहुत लंबी है।

हिब्रू में यही कहा गया है। देखिए, जब आप गुस्सा होते हैं, तो आपकी नाक लाल हो जाती है। भगवान की नाक पिनोच्चियो जैसी है।

रेड को अंत तक पहुंचने में बहुत समय लगता है। वह हेसेड से भरपूर है। हमने पहले भी इस बारे में बात की है।

वह हज़ारों की गिनती में उद्धार पाता है, और दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है।

वह किस तरह का भगवान है। अब सोचिए कि अभी क्या हुआ है। सोने का बछड़ा अभी-अभी हुआ है।

क्या तुम देखना चाहते हो कि मैं कौन हूँ, मूसा? यह बात अपने दिमाग में बिठा लो, मूसा। मैं किस तरह का भगवान हूँ। मैं कोई बहुत जल्दी गुस्सा होने वाला आदमी नहीं हूँ।

जिस पल आप उसे तिरछी नज़र से देखते हैं, वह आपको जिंदा भून देता है। नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ। मैं आपकी कल्पना से बिल्कुल अलग तरह का प्राणी हूँ।

अब, इस आयत को पढ़ने वाला लगभग हर व्यक्ति तुरन्त 7B पर पहुँच जाता है। लेकिन वह दोषी को दण्डित किए बिना नहीं छोड़ता। वह माता-पिता के पाप के लिए बच्चों और उनके बच्चों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक दण्डित करता है।

उह-हह। यह कैसा ईश्वर है? हम उसके बारे में पहले कही गई हर बात को अनदेखा कर देते हैं और कहते हैं, यह कैसा ईश्वर है जो कहता है, अगर तुम पाप करोगे, तो मैं तुम्हारे बच्चों को ले लूँगा? संदर्भ। संदर्भ।

संदर्भ: ओह, वह दयालु और कृपालु है।

वह क्रोध करने में धीमा है। वह प्रेम और सच्चाई से भरपूर है। वह हज़ारों लोगों तक प्रेम रखता है, दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है।

मुझे लगता है कि मैं पाप करूँगा और वह मुझे माफ़ कर देगा। और भगवान कहते हैं, हाँ ... हाँ, यह संभव है।

लेकिन याद रखें। पाप के परिणाम होते हैं। उसे क्षमा नहीं किया जा सकता।

अगर मैं शराब पीने का फैसला करता हूँ, और जब मैं 65 साल का हो जाता हूँ, तो प्रभु को ढूँढता हूँ, और वह मुझे माफ़ कर देता है और मुझे धोकर साफ़ कर देता है, तो मेरे बच्चे मेरे नशे के असर को अपनी पूरी ज़िंदगी झेलते रहेंगे, भले ही मुझे माफ़ कर दिया गया हो। इसका मतलब यह है कि, भगवान के लिए, भगवान की माफ़ी पर यह मत सोचो कि पाप का कोई असर नहीं है। बाइबल दूसरे अंशों में बहुत स्पष्ट है कि लोग सीधे नहीं होते।

किसी बेटे को इसलिए नहीं मारा जा सकता क्योंकि उसके पिता ने किसी की हत्या की है। आप पिता की सज़ा बेटे को नहीं दे सकते। बाइबल इस बारे में बहुत स्पष्ट है।

हम यहाँ इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम बच्चों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, पिता को बिना किसी सजा के छोड़ दिया जाना, और बच्चों को ईश्वर द्वारा मनमाने ढंग से दंडित किया जाना। हम पाप के प्रभाव के बारे में बात कर रहे हैं।

इसलिए, यह महान, महान अंश, श्लोक 8, मूसा ने तुरंत जमीन पर झुककर पूजा की। उसने कहा, हे प्रभु, अगर मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो प्रभु को हमारे साथ जाने दें। हालाँकि यह एक हठीले लोग हैं, हमारी दुष्टता और हमारे पाप को क्षमा करें और हमें अपनी विरासत के रूप में स्वीकार करें।

यहाँ वह स्थान है जहाँ मूसा वास्तव में प्रायश्चित्त कर रहा है, यदि आप चाहें तो। मुझे नहीं लगता कि वह अध्याय 33 में प्रायश्चित्त कर रहा था जब उसने कहा, अब, हे परमेश्वर, यदि आप इन लोगों को मारने जा रहे हैं, तो आप मुझे भी मार देंगे। मुझे नहीं लगता कि वह यह नहीं कह रहा था कि उनकी जगह मेरी जान ले लो।

लेकिन यहाँ, यहाँ परमेश्वर के इस दर्शन के साथ, वह कह रहा है, हे प्रभु, हे प्रभु, यदि आप कर सकते हैं। हम हठी हैं, लेकिन यदि आप हमारी दुष्टता और हमारे पाप को क्षमा कर सकते हैं और हमें अपना बना सकते हैं। और हमने इस शब्द विरासत की कठिनाई के बारे में पहले थोड़ी बात की है।

भगवान किसी भी चीज़ को कैसे विरासत में पा सकते हैं? इस शब्द का अर्थ कई जगहों पर यही है। लेकिन, जैसा कि मैंने कई बार कहा है, हिब्रू शब्द अधिकांश अंग्रेजी शब्दों से बहुत बड़े हैं। इसलिए अगर आप इसे सही तरीके से लिखते हैं तो यह मददगार साबित होता है।

मुझे लगता है कि न्यू लिविंग ट्रांसलेशन बिल्कुल सही है जब वह कहता है कि आपका विशेष अधिकार। हे परमेश्वर, हमने जो कुछ भी किया है उसके बावजूद। हमने अपनी वाचा को कैसे तोड़ा है इसके बावजूद।

कृपया हमें माफ़ कर दें और हमें वहाँ ले जाएँ जहाँ आपने निर्गमन 19 में कहा था कि आप वहाँ वापस जाएँगे। अगर आप मेरी वाचा का पालन करेंगे, तो आप मेरी ख़ास संपत्ति बन जाएँगे। हे परमेश्वर, हमने आपकी वाचा तोड़ दी है।

क्या आप अभी भी हमें अपनी विशेष संपत्ति के रूप में स्वीकार करेंगे? और अध्याय के बाकी हिस्सों में आगे क्या होता है कि परमेश्वर हाँ कहता है। परमेश्वर एकतरफा वाचा को नवीनीकृत करता है। अध्याय 20 से 24 में सिनाई वाचा एक द्विपक्षीय वाचा है।

लोग कहते हैं कि हम ये करेंगे और भगवान कहते हैं कि मैं वो करूँगा। यहाँ, यह एकतरफा है। भगवान कहते हैं कि मैं ये करूँगा।

ठीक है। अध्याय 34 में आखिरी चीज़ है चमकता हुआ चेहरा। और फिर से, मुझे लगता है कि यह उस विषय पर वापस जाता है जिसके बारे में हम यहाँ तक बात कर रहे हैं।

उसने परमेश्वर का चेहरा देखा, और परिणामस्वरूप, उसका चेहरा चमक उठा। उसने परमेश्वर का चेहरा देखा और उसका कुछ अंश उसके चेहरे पर भी दिखाई दिया। मैं हमेशा नए नियम के अंश के बारे में सोचता हूँ।

उन्होंने उन पर ध्यान दिया कि वे यीशु के साथ थे। मुझे बताया गया है कि जब दो लोग लंबे समय तक एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो वे एक-दूसरे की तरह दिखने लगते हैं। यह कैरन के लिए बुरी खबर है, लेकिन मेरे लिए अच्छी खबर है।

मुझे नहीं पता कि यह मानव जीवन में सच है या नहीं, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि यह आध्यात्मिक जीवन में सच है। सालों-साल उसके साथ आमने-सामने रहना उसके जैसा दिखना शुरू करना है। यह उसके चेहरे की चमक को साझा करना शुरू करना है। यही अच्छी खबर है।

आइए प्रार्थना करें। प्रभु यीशु, आपका धन्यवाद।

हमें परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने और आपसे आमने-सामने बात करने के लिए संभव बनाने के लिए आपका धन्यवाद, जैसा कि एक बार केवल मूसा के लिए संभव था। हे ईश्वर, हमें क्षमा करें कि अक्सर हमारा धर्म बस यही होता है, एक ऐसा धर्म जिसमें हम कुछ कर्तव्य निभाते हैं और कुछ रूपों को अपनाते हैं, लेकिन आपकी उपस्थिति की वास्तविकता हमारे बीच बहुत असामान्य है। इसे बदलो, प्रभु।

हमें मूसा की वह लालसा दो। मुझे अपने मार्ग दिखाओ क्योंकि मैं तुम्हें जानना चाहता हूँ। इन भाइयों और बहनों के लिए, इन पिछले महीनों में इस प्रयास में उनकी वफ़ादारी के लिए धन्यवाद।

अगले सप्ताह जब हम अपने अंतिम सत्र में आएँगे, तो क्या आप फिर से अपनी उपस्थिति से हमें अनुग्रहित करेंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि अपने वचन हमारे हृदय पर लिखें। आपके नाम में। आमीन।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 15, निर्गमन 33-34 है।